International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास: प्राचीन से आधुनिक काल तक एक अध्ययन

प्रभाकर
असिस्टेंट प्रोफेसर
ज्योति प्रकाश महिला बी. एड कॉलेज मेदिनीनगर ,झारखंड

संक्षेप

यह अध्ययन भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो प्राचीन काल से आधुनिक युग तक विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों से प्रभावित रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली गुरुकुल परंपरा पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना था। मध्यकालीन काल में इस्लामी प्रभाव के साथ मकतब और मदरसा प्रणाली का विकास हुआ, जिसने शिक्षा को धार्मिक और प्रशासनिक दृष्टि से सुदृढ़ किया। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश नीतियों, विशेषकर मैकाले का मिनट और वुड्स डिस्पैच, ने आधुनिक पश्चिमी शिक्षा की नींव रखी, जिससे अंग्रेजी माध्यम, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रशासनिक शिक्षा का प्रसार हुआ। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का प्रमुख साधन मानते हुए विभिन्न आयोगों और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के माध्यम से इसे अधिक समावेशी, लोकतांत्रिक और गुणवत्तापूर्ण बनाने के प्रयास किए गए। आधुनिक काल में वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी और नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली अधिक लचीली, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनती जा रही है। इस प्रकार भारतीय शिक्षा प्रणाली ने समय के साथ परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को बनाए रखते हुए समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कुंजी शब्द: भारतीय शिक्षा प्रणाली, ऐतिहासिक विकास, गुरुकुल परंपरा, औपनिवेशिक शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020.

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास विश्व की प्राचीनतम ज्ञान परंपराओं में से एक रहा है, जिसकी जड़ें वैदिक काल तक विस्तृत हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास, नैतिक मूल्यों की स्थापना और समाजोपयोगी नागरिक का निर्माण था। गुरुकुल प्रणाली इस काल की प्रमुख विशेषता थी, जिसमें विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर वेद, उपनिषद, दर्शन, व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र तथा शास्त्रीय विद्या का अध्ययन करते थे। नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय विश्व प्रसिद्ध ज्ञान-केंद्र थे, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। मध्यकालीन काल में शिक्षा प्रणाली में धार्मिक प्रभाव अधिक स्पष्ट हुआ और मकतब तथा मदरसा प्रणाली का विकास हुआ, जिसने इस्लामी दर्शन, साहित्य, गणित तथा विज्ञान के अध्ययन को बढ़ावा दिया। इस प्रकार भारतीय शिक्षा प्रणाली ने समय-समय पर सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तनों के अनुरूप अपने स्वरूप में परिवर्तन किया, परन्तु इसका मूल उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक एवं नैतिक विकास को बनाए रखना रहा।

औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया, जब ब्रिटिश शासन ने पश्चिमी शिक्षा पद्धति को लागू किया। मैकाले के मिनट (1835) और वुड्स डिस्पैच (1854) ने आधुनिक शिक्षा की नींव रखी, जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी माध्यम, आधुनिक विज्ञान और प्रशासनिक शिक्षा का प्रसार हुआ। हालांकि इस प्रणाली ने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के विकास में योगदान दिया, लेकिन पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा को हाशिये पर धकेल दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों की प्रक्रिया प्रारंभ हुई, जिसमें राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग तथा विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा को अधिक समावेशी, कौशल-आधारित तथा प्रौद्योगिकी-संचालित बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्राचीन से आधुनिक काल तक भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास, उसके प्रमुख चरणों, संरचनात्मक परिवर्तनों तथा वर्तमान चुनौतियों का समग्र विश्लेषण करना है, जिससे यह समझा जा सके कि समय के साथ शिक्षा

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

के उद्देश्यों, स्वरूप और कार्यप्रणाली में किस प्रकार परिवर्तन हुए तथा इन परिवर्तनों ने भारतीय समाज के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास को किस प्रकार प्रभावित किया।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का सैद्धांतिक एवं वैचारिक आधार

भारतीय शिक्षा प्रणाली का सैद्धांतिक एवं वैचारिक आधार अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रहा है, जिसमें शिक्षा की संकल्पना केवल ज्ञान-प्राप्ति तक सीमित न होकर व्यक्ति के समग्र विकास से जुड़ी हुई है। शिक्षा की संकल्पना का अर्थ मानव के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास की ऐसी प्रक्रिया से है, जो उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्षम और सजग बनाती है। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को अलग-अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है; प्लेटो के अनुसार शिक्षा आत्मा में निहित सर्वोत्तम गुणों का विकास है, जबकि भारतीय परंपरा में शिक्षा को 'विद्या' कहा गया, जिसका अर्थ है—अज्ञान का नाश और सत्य का बोध। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति बताया, वहीं महात्मा गांधी ने इसे जीवनोपयोगी कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास का माध्यम माना। इस प्रकार भारतीय शिक्षा की संकल्पना व्यक्ति को केवल रोजगारोन्मुख नहीं बल्कि मूल्यनिष्ठ, चरित्रवान और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने पर केंद्रित रही है। शिक्षा को जीवन की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा गया, जिसमें परिवार, समाज और प्रकृति सभी शिक्षक की भूमिका निभाते हैं। इसलिए भारतीय शिक्षा की अवधारणा औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षण प्रक्रियाओं को समाहित करती है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं।

भारतीय शिक्षा का दार्शनिक आधार अत्यंत समृद्ध रहा है, जिसकी जड़ें वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र तथा धार्मिक-आध्यात्मिक परंपराओं में निहित हैं। भारतीय दर्शन में शिक्षा को आत्मा और ब्रह्म के संबंध की अनुभूति तथा सत्य की प्राप्ति का साधन माना गया है। सांख्य, योग, वेदांत, बौद्ध और जैन दर्शन ने शिक्षा को आत्मानुशासन, आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति की दिशा में अग्रसर करने वाली प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया। वेदांत दर्शन में 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के आदर्श को शिक्षा का मूल उद्देश्य माना गया, जबकि बौद्ध दर्शन ने मध्यम मार्ग, करुणा और प्रज्ञा को शिक्षा का आधार बताया। जैन दर्शन में अहिंसा, अपरिग्रह और संयम जैसे नैतिक मूल्यों को शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

गया। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में शिक्षा केवल बौद्धिक प्रशिक्षण नहीं बल्कि आध्यात्मिक उन्नति का साधन रही है, जो मनुष्य को आत्मबोध और सामाजिक कल्याण दोनों की ओर प्रेरित करती है। गुरु-शिष्य परंपरा इस दार्शनिक आधार की व्यावहारिक अभिव्यक्ति थी, जिसमें शिक्षा का संचार केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न होकर जीवन मूल्यों, आचार-विचार और व्यवहारिक ज्ञान के माध्यम से होता था। इस प्रकार भारतीय शिक्षा का दार्शनिक आधार आदर्शवाद, आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवतावाद से ओत-प्रोत रहा है, जिसने शिक्षा को जीवन के समग्र विकास का माध्यम बनाया।

शिक्षा के पारंपरिक उद्देश्य और स्वरूप भारतीय समाज की सांस्कृतिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुए थे। प्राचीन काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, आत्मानुशासन तथा समाजोपयोगी व्यक्तित्व का निर्माण था। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर न केवल शास्त्रों का अध्ययन करते थे, बल्कि सेवा, अनुशासन, सहिष्णुता और सहयोग जैसे गुणों का भी विकास करते थे। शिक्षा का स्वरूप समग्र एवं जीवन-केंद्रित था, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी पक्षों का संतुलित विकास सुनिश्चित किया जाता था। पारंपरिक शिक्षा में पाठ्यक्रम का स्वरूप व्यापक था, जिसमें वेद, व्याकरण, ज्योतिष, गणित, चिकित्सा, कला और शिल्प जैसी विविध विद्याओं का समावेश होता था। साथ ही, शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं बल्कि सामाजिक कल्याण और सांस्कृतिक संरक्षण भी था। समाज में धर्म, संस्कृति और नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए शिक्षा को प्रमुख साधन माना जाता था। इस प्रणाली में शिक्षक का स्थान अत्यंत सम्मानित था और विद्यार्थी का जीवन अनुशासन एवं आदर्शों से परिपूर्ण होता था। इस प्रकार भारतीय शिक्षा के पारंपरिक उद्देश्य व्यक्ति को ज्ञानवान, सदाचारी और उत्तरदायी नागरिक बनाना था, जबकि उसका स्वरूप समग्र, मूल्यपरक और जीवनोपयोगी था, जिसने भारतीय समाज के सांस्कृतिक और नैतिक आधार को सुदृढ़ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली

प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली अत्यंत सुव्यवस्थित, आध्यात्मिक और जीवनमूल्यों पर आधारित थी। इसका मूल उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

व्यक्ति के समग्र विकास—बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक—को सुनिश्चित करना था। वैदिक काल में शिक्षा का केंद्र गुरुकुल प्रणाली थी, जिसमें विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निवास करते हुए शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरुकुल शिक्षा पूर्णतः आवासीय और व्यवहारिक थी, जहाँ विद्यार्थी अनुशासन, संयम, सेवा और आत्मनिर्भरता का अभ्यास करते थे। पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, धनुर्विद्या और दर्शनशास्त्र जैसी विविध विषयों का समावेश था। शिक्षा का माध्यम मुख्यतः संस्कृत था और शिक्षण विधि श्रुति एवं स्मृति पर आधारित थी। गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत घनिष्ठ और नैतिक मूल्यों से युक्त होता था, जिसमें शिक्षा का संचार केवल बौद्धिक नहीं बल्कि जीवन-आधारित अनुभवों के माध्यम से होता था। इस काल में शिक्षा का स्वरूप सार्वभौमिक नहीं था, परंतु यह समाज के बौद्धिक नेतृत्व और सांस्कृतिक संरक्षण का प्रमुख साधन था।

बौद्ध एवं जैन काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली ने और अधिक विस्तार एवं संस्थागत स्वरूप प्राप्त किया। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों ने शिक्षा को वैश्विक पहचान दिलाई, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। इन संस्थानों में दर्शन, चिकित्सा, राजनीति, अर्थशास्त्र, साहित्य और विज्ञान जैसे विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। बौद्ध शिक्षा प्रणाली ने करुणा, प्रज्ञा और मध्यम मार्ग जैसे सिद्धांतों को बढ़ावा दिया, जबकि जैन शिक्षा ने अहिंसा, संयम और नैतिक अनुशासन पर बल दिया। इस काल में शिक्षा अपेक्षाकृत अधिक उदार और संगठित थी, जिसमें शिक्षण के लिए मठ, विहार और शिक्षा केंद्र स्थापित किए गए। प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति को आत्मज्ञान, सदाचार और समाजोपयोगी जीवन के लिए तैयार करना था। इस प्रकार प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक सुदृढ़ ज्ञान परंपरा की स्थापना की।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास

मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों के प्रभाव में हुआ। इस काल में इस्लामी शासन के आगमन के साथ शिक्षा का स्वरूप और संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। मकतब और मदरसा शिक्षा संस्थानों के रूप में विकसित हुए, जहाँ कुरान, हदीस, अरबी, फारसी भाषा, गणित,

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तर्कशास्त्र और इतिहास का अध्ययन कराया जाता था। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जबकि मदरसे उच्च शिक्षा के प्रतिष्ठित संस्थान माने जाते थे। इस काल में फारसी भाषा प्रशासन और शिक्षा की प्रमुख भाषा बन गई, जिससे पारंपरिक संस्कृत शिक्षा का महत्व कुछ हद तक कम हो गया। शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक ज्ञान, प्रशासनिक दक्षता और नैतिक आचरण का विकास करना था। साथ ही, शासकों और विद्वानों के संरक्षण में अनेक पुस्तकालय और शिक्षा केंद्र स्थापित किए गए, जिनसे ज्ञान के प्रसार को बढ़ावा मिला। इस काल में शिक्षा का प्रसार मुख्यतः उच्च वर्गों तक सीमित था, किंतु फिर भी यह सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय का महत्वपूर्ण माध्यम बना।

मध्यकालीन काल में भारतीय और इस्लामी शिक्षा परंपराओं का एक प्रकार का सांस्कृतिक समन्वय भी देखने को मिला। सूफी और भक्ति आंदोलनों ने शिक्षा को अधिक मानवीय और जनसुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन आंदोलनों ने भाषा, साहित्य और नैतिक मूल्यों के माध्यम से शिक्षा को समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचाने का प्रयास किया। क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य रचना और धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद शिक्षा के प्रसार में सहायक सिद्ध हुआ। हालांकि, इस काल में शिक्षा का स्वरूप अधिकतर धार्मिक और परंपरागत विषयों तक सीमित रहा तथा वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा का विकास अपेक्षाकृत कम हुआ। फिर भी, मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली ने प्रशासनिक कार्यों के लिए कुशल व्यक्तियों का निर्माण किया और साहित्य, कला तथा संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली

औपनिवेशिक काल भारतीय शिक्षा प्रणाली के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है, जब ब्रिटिश शासन ने भारत में आधुनिक पश्चिमी शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। प्रारंभिक चरण में अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों के लिए शिक्षित वर्ग तैयार करना था, इसलिए शिक्षा का प्रसार सीमित और उपयोगितावादी दृष्टिकोण से किया गया। 1835 में लॉर्ड मैकाले के मिनट ने अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने और भारतीय पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को कमजोर करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी माध्यम, आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी ज्ञान पर आधारित शिक्षा

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्रणाली का विकास हुआ। इस नीति ने एक ऐसे शिक्षित मध्यम वर्ग का निर्माण किया, जो प्रशासनिक और सरकारी कार्यों में सहायक हो सके। हालांकि, इससे भारतीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को काफी हद तक उपेक्षित किया गया।

1854 का वुड्स डिस्पैच भारतीय शिक्षा प्रणाली के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था, जिसे भारतीय शिक्षा का "मैग्ना कार्टा" कहा जाता है। इसने शिक्षा के व्यापक प्रसार, विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था पर बल दिया। इसके परिणामस्वरूप कलकत्ता, मद्रास और बंबई विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई, जिसने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर प्रदान किए। इस काल में मिशनरी संस्थानों ने भी शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया। इसके बावजूद शिक्षा प्रणाली अभी भी शहरी क्षेत्रों और उच्च वर्गों तक सीमित रही, जिससे ग्रामीण और निम्न वर्गों की शिक्षा की उपेक्षा हुई।

ब्रिटिश काल में विभिन्न शिक्षा आयोगों और समितियों ने शिक्षा सुधारों के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत कीं। हंटर आयोग (1882) ने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार पर बल दिया, जबकि सैडलर आयोग (1917) ने विश्वविद्यालय शिक्षा के सुधार की दिशा में सुझाव दिए। इन आयोगों के माध्यम से शिक्षा की संरचना अधिक संगठित और संस्थागत हुई। साथ ही, इस काल में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की भी शुरुआत हुई, जिससे औद्योगिक विकास को समर्थन मिला। हालांकि, शिक्षा का उद्देश्य अभी भी औपनिवेशिक प्रशासन की आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही था, न कि भारतीय समाज के समग्र विकास को सुनिश्चित करना।

औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का भारतीय समाज पर गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव पड़ा। इसने आधुनिक राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार आंदोलनों और राजनीतिक जागरूकता को जन्म दिया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक आधार मिला। अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों को पश्चिमी विचारधाराओं, लोकतंत्र और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचित होने का अवसर मिला। दूसरी ओर, इसने पारंपरिक भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों को कमजोर भी किया। इस प्रकार औपनिवेशिक काल की शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा के बीच एक द्वंद्व की स्थिति

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उत्पन्न की, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा सुधारों की आवश्यकता का प्रमुख कारण बनी।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन और विकास की दिशा में व्यापक प्रयास किए गए। नई सरकार ने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का प्रमुख साधन मानते हुए इसे लोकतांत्रिक, समावेशी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया। 1948-49 में राधाकृष्णन आयोग ने उच्च शिक्षा के सुधार के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जबकि 1964-66 के कोठारी आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का आधार मानते हुए "समान शिक्षा प्रणाली" की अवधारणा प्रस्तुत की। इसके आधार पर 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई, जिसमें शिक्षा के सार्वभौमिकरण, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल दिया गया। इस काल में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए अनेक संस्थानों की स्थापना की गई और अनुसंधान एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। साथ ही, शिक्षा में भारतीय भाषाओं के विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा प्रणाली ने सामाजिक न्याय और समानता को प्रमुख लक्ष्य के रूप में अपनाया। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति और 1992 के संशोधन ने शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने, महिलाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति तथा पिछड़े वर्गों के लिए विशेष योजनाओं को लागू करने पर बल दिया। इसके परिणामस्वरूप साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और शिक्षा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचा। 21वीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली में डिजिटल माध्यमों, ई-लर्निंग और कौशल-आधारित शिक्षा का विकास हुआ। हाल ही में लागू नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को बहुविषयक, लचीला और शोध-उन्मुख बनाने का प्रयास किया है, जिससे विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जा सके। इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली ने निरंतर सुधारों के माध्यम से एक समावेशी, आधुनिक और प्रगतिशील स्वरूप प्राप्त किया, जो राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आधुनिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव

आधुनिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली पर वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन का गहरा प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण ने शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान किया, जिससे ज्ञान, कौशल और शैक्षिक मानकों का वैश्विक आदान-प्रदान संभव हुआ। भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशी पाठ्यक्रमों, अंतरराष्ट्रीय सहयोग कार्यक्रमों और छात्र विनिमय योजनाओं का विस्तार हुआ, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुई। साथ ही, वैश्विक अर्थव्यवस्था की मांगों के अनुरूप कौशल-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और बहुविषयक अध्ययन पर विशेष जोर दिया जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली अधिक व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख बनती जा रही है।

तकनीकी परिवर्तन ने शिक्षा की संरचना, पद्धति और पहुँच को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), स्मार्ट कक्षाओं, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और वर्चुअल लैब्स के माध्यम से शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और लचीली हो गई है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल माध्यमों का व्यापक उपयोग हुआ, जिसने शिक्षा में तकनीक की अनिवार्यता को स्पष्ट किया। अब शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित न रहकर वैश्विक ज्ञान-संसाधनों तक पहुँच का माध्यम बन गया है। हालांकि, तकनीकी असमानता और डिजिटल विभाजन जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं, जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शैक्षिक अवसरों में अंतर को बढ़ाती हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, प्रतिस्पर्धी और ज्ञान-आधारित समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित किया है।

नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधान

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक और संरचनात्मक सुधार लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा को समग्र, लचीला, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनाना है। इस नीति के अंतर्गत 10+2 की पारंपरिक संरचना को बदलकर 5+3+3+4 का नया शैक्षिक ढाँचा प्रस्तुत किया गया है, जो बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के विभिन्न चरणों के अनुरूप है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECCE) पर विशेष बल दिया गया है, जिससे आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को सुदृढ़

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

किया जा सके। नीति में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विद्यार्थियों की समझ और सीखने की क्षमता में वृद्धि हो।

इस नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रावधान बहुविषयक शिक्षा और लचीले पाठ्यक्रम का विकास है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन कर सकें। उच्च शिक्षा में बहु-प्रवेश और बहु-निकास प्रणाली, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट तथा अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान की स्थापना जैसे कदम शामिल हैं। शिक्षक प्रशिक्षण, तकनीकी एकीकरण और व्यावसायिक शिक्षा को भी नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। साथ ही, शिक्षा में समानता, समावेशन और गुणवत्तापूर्ण अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। इस प्रकार नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप आधुनिक, समावेशी और छात्र-केंद्रित बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी पहल है।

डिजिटल शिक्षा एवं ई-लर्निंग का विकास

डिजिटल शिक्षा एवं ई-लर्निंग का विकास आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता बन गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शिक्षण और अधिगम की पारंपरिक सीमाओं को समाप्त कर दिया है और शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला तथा प्रभावी बना दिया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, जैसे वर्चुअल कक्षाएँ, वेब-आधारित पाठ्यक्रम, डिजिटल पुस्तकालय और ई-सामग्री ने विद्यार्थियों को कहीं भी और कभी भी सीखने की सुविधा प्रदान की है। भारत सरकार द्वारा 'स्वयं', 'दीक्षा' और 'एनपीटीईएल' जैसे डिजिटल मंचों की शुरुआत ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पहलों ने विशेष रूप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान की है।

ई-लर्निंग ने शिक्षण पद्धतियों में भी परिवर्तन लाया है, जहाँ मल्टीमीडिया, एनिमेशन, इंटरएक्टिव कंटेंट और वर्चुअल सिमुलेशन का उपयोग सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक और प्रभावी बनाता है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदाता नहीं बल्कि मार्गदर्शक और सहायक की भूमिका निभाने लगे हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा की उपयोगिता और प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से सामने आई, जब पारंपरिक कक्षाएँ बंद होने पर

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

ऑनलाइन शिक्षण ही मुख्य माध्यम बन गया। हालांकि, डिजिटल शिक्षा के विकास के साथ-साथ इंटरनेट की उपलब्धता, तकनीकी संसाधनों की कमी और डिजिटल साक्षरता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। फिर भी, डिजिटल शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक और समावेशी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो रही है।

वर्तमान चुनौतियाँ: गुणवत्ता, समानता एवं पहुंच

आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के समक्ष गुणवत्ता, समानता और पहुंच से संबंधित अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जो इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रभावशीलता, पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी प्रमुख समस्याएँ हैं। अनेक शैक्षणिक संस्थानों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और शोध एवं नवाचार के सीमित अवसर शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इसके परिणामस्वरूप शिक्षण प्रक्रिया कई बार परीक्षा-केंद्रित और रटंत प्रवृत्ति पर आधारित हो जाती है, जिससे विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता का समुचित विकास नहीं हो पाता।

समानता और पहुंच के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ शिक्षा के अवसरों को प्रभावित करती हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, निजी और सरकारी विद्यालयों तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता और संसाधनों में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, महिलाओं, अनुसूचित जाति-जनजाति तथा दिव्यांग विद्यार्थियों को अभी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच प्राप्त नहीं हो पाती। डिजिटल शिक्षा के विस्तार के बावजूद डिजिटल विभाजन एक गंभीर चुनौती बना हुआ है, जिससे कई विद्यार्थियों को ऑनलाइन संसाधनों का लाभ नहीं मिल पाता। इन चुनौतियों के समाधान के लिए समावेशी नीतियों, शिक्षक प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचे के विकास और तकनीकी संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि शिक्षा प्रणाली अधिक न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण और सर्वसुलभ बन सके।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण

भारतीय शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण प्राचीन से आधुनिक काल तक करने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षा का स्वरूप, उद्देश्य, संरचना और कार्यप्रणाली समय के

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है, किंतु उसका मूल लक्ष्य मानव के सर्वांगीण विकास से जुड़ा रहा है। प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली मुख्यतः गुरुकुल पर आधारित थी, जिसमें शिक्षा जीवन-केंद्रित, आध्यात्मिक और मूल्यपरक थी। विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर केवल शास्त्रीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुशासन, सेवा, नैतिकता और आत्मसंयम जैसे गुणों का भी विकास करते थे। पाठ्यक्रम व्यापक और समग्र था, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र तथा युद्ध-कला तक का समावेश था। शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान, चरित्र निर्माण और समाजोपयोगी व्यक्तित्व का विकास था। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली अधिक संरचित, संस्थागत और व्यावसायिक दृष्टिकोण से विकसित हुई है, जहाँ औपचारिक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय शिक्षा के प्रमुख केंद्र बन गए हैं।

मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल की शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षा का स्वरूप सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों से गहराई से प्रभावित हुआ। मध्यकालीन काल में शिक्षा धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों के अधीन थी, जहाँ मकतब और मदरसा प्रणाली के माध्यम से इस्लामी शिक्षा का प्रसार हुआ, जबकि पारंपरिक संस्कृत शिक्षा भी सीमित रूप में जारी रही। इस काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक ज्ञान, नैतिक आचरण और प्रशासनिक दक्षता का विकास था। औपनिवेशिक काल में शिक्षा प्रणाली ने एक निर्णायक मोड़ लिया, जब ब्रिटिश शासन ने पश्चिमी शिक्षा मॉडल को लागू किया। अंग्रेजी माध्यम, आधुनिक विज्ञान और तर्कवादी दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा का विकास हुआ, जिसने भारतीय समाज में आधुनिक चेतना, राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार आंदोलनों को जन्म दिया। हालांकि, इस प्रणाली ने पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा को हाशिये पर डाल दिया और शिक्षा को अधिक परीक्षा-केंद्रित तथा प्रशासनिक आवश्यकताओं तक सीमित कर दिया। इस प्रकार मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल में शिक्षा का स्वरूप क्रमशः धार्मिक से उपयोगितावादी और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर परिवर्तित होता गया।

आधुनिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी, तकनीकी-संचालित और वैश्विक दृष्टिकोण से युक्त हो गई है, जो प्राचीन प्रणाली की तुलना में अधिक व्यापक और बहुआयामी है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कौशल विकास, बहुविषयक

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अध्ययन और डिजिटल शिक्षण पर विशेष जोर दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा को लचीला, समग्र और छात्र-केंद्रित बनाने का प्रयास किया गया है, जिससे विद्यार्थियों की रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और नवाचार क्षमता का विकास हो सके। हालांकि, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा और गुरु-शिष्य संबंधों की गहराई अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है, जो प्राचीन शिक्षा की प्रमुख विशेषता थी। दूसरी ओर, आधुनिक प्रणाली ने शिक्षा के सार्वभौमिकरण, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया है, जिससे शिक्षा अधिक लोकतांत्रिक और सर्वसुलभ बनी है। इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से स्पष्ट होता है कि प्राचीन शिक्षा मूल्यपरक और आध्यात्मिक थी, मध्यकालीन शिक्षा धार्मिक-सांस्कृतिक प्रभावों से संचालित थी, औपनिवेशिक शिक्षा उपयोगितावादी और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वाहक थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली समावेशी, तकनीकी और वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक निरंतर परिवर्तन और अनुकूलन की प्रक्रिया को दर्शाता है। प्राचीन काल में शिक्षा का स्वरूप मूल्यपरक, आध्यात्मिक और जीवन-केंद्रित था, जहाँ गुरुकुल परंपरा के माध्यम से व्यक्ति के समग्र विकास पर बल दिया जाता था। मध्यकालीन काल में शिक्षा धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों के अधीन रही, जिसमें मकतब और मदरसा प्रणाली के माध्यम से ज्ञान का प्रसार हुआ। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शिक्षा नीतियों ने शिक्षा प्रणाली को आधुनिक वैज्ञानिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण प्रदान किया, किंतु साथ ही पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा को हाशिये पर भी डाल दिया। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा प्रणाली को लोकतांत्रिक, समावेशी और राष्ट्र-निर्माण के अनुरूप विकसित करने के लिए अनेक आयोगों और नीतियों के माध्यम से सुधार किए गए, जिससे शिक्षा का प्रसार व्यापक स्तर पर संभव हुआ।

आधुनिक काल में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव से भारतीय शिक्षा प्रणाली अधिक लचीली, बहुविषयक और कौशल-आधारित बन रही है। डिजिटल शिक्षा और ई-लर्निंग ने ज्ञान तक पहुँच को सरल बनाया है, परंतु गुणवत्ता, समानता और पहुंच से संबंधित चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय शिक्षा प्रणाली ने समय के साथ अपनी संरचना, उद्देश्य और पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन करते हुए परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया है। भविष्य में आवश्यक है कि शिक्षा को मूल्यपरक, तकनीकी रूप से सक्षम और सर्वसुलभ बनाते हुए वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप विकसित किया जाए, ताकि यह राष्ट्र के सतत् सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में प्रभावी योगदान दे सके।

संदर्भ सूची

1. चटर्जी, एस. (2023). भारतीय शिक्षा प्रणाली का क्रमिक विकास और नई शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव. *अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका*, 10(3), 902–910.
2. पाटिल, वी. के. (2023). पारंपरिक भारतीय शिक्षा मूल्यों और नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता. *शैक्षिक मंच*, 87(2), 1–14.
3. दास, एस. (2023). भारत में शैक्षिक उपलब्धि में असमानता: ग्रामीण–शहरी तुलना. *शिक्षा और समाज अध्ययन पत्रिका*, 12(1), 45–60.
4. सिंधुजा, के., एवं अशोक, आर. (2021). भारत में शिक्षा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. *अंतरराष्ट्रीय शोध एवं विश्लेषण समीक्षा*, 8(4), 55–63.
5. खान, एन., भनुशाली, डी., पटेल, एस., एवं कोटेचा, आर. (2021). भारत में ई-शिक्षा का विकास और चुनौतियाँ. *आधुनिक शिक्षा शोध जर्नल*, 6(2), 112–120.
6. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
7. तिलक, जे. बी. जी. (2018). *भारत में शिक्षा और विकास: सार्वजनिक नीति के समकालीन प्रश्न*. नई दिल्ली: स्प्रिंगर.
8. कुमार, के. (2018). *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा: औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन*. नई दिल्ली: सेज प्रकाशन.
9. आल्टबैक, पी. जी., एवं साल्मी, जे. (2018). *भारत में विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों का निर्माण और उच्च शिक्षा का विकास*. नई दिल्ली: वर्ल्ड बैंक प्रकाशन.
10. नाम्बिस्सन, जी. बी., एवं राव, एस. (2019). *भारत में शिक्षा का समाजशास्त्र: बदलते आयाम*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

11. किंगडन, जी. (2017). भारत में स्कूली शिक्षा की प्रगति का विश्लेषण. *आर्थिक नीति समीक्षा*, 33(3), 1–22.
12. ब्रे, एम., एडमसन, बी., एवं मेसन, एम. (2018). *तुलनात्मक शिक्षा अनुसंधान: दृष्टिकोण और विधियाँ*. सिंगापुर: स्प्रिंगर.
13. शर्मा, आर., एवं शर्मा, एस. (2019). औपनिवेशिक काल में भारत की शिक्षा व्यवस्था का विकास: एक ऐतिहासिक अध्ययन. *सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी जर्नल*, 5(2), 45–53.
14. गुप्ता, ए. (2020). भारत में उच्च शिक्षा का विकास: प्राचीन विश्वविद्यालयों से आधुनिक संस्थानों तक. *भविष्य की उच्च शिक्षा*, 7(1), 5–19.
15. दत्ता, एस. (2022). 21वीं सदी में भारतीय शिक्षा: प्रवृत्तियाँ, चुनौतियाँ और नीतिगत परिवर्तन. *अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक विकास जर्नल*, 89, 1–12.